संगीत परम्परा में राधा और कृष्ण

कृतिका पाण्डेय
एम0पी0ए0, म्युजिकोलॉजीए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,वाराणसी

सभी सभ्यताओं में संगीत का जन्म भक्तिभावना से हुआ है और इसी में उसका निरन्तर पल्लवन और विकास भी होता रहा है। प्राचीन मानव के गीत, वाद्य तथा नृत्य भी ऐसे ही धार्मिक प्रसंगो द्वारा विकसित हुए है। आज भी आदिम जातियाँ धार्मिक पर्वों पर गीत गाने के साथ–साथ विविध वाद्यों तथा नृत्यों का प्रयोग करती पाई जाती है। सामवेद का संगीत भारत के इतिहास का प्रथम भक्ति संगीत होने का अधिकारी है। यह वह संगीत है, जिसमें भक्त अपने आराध्य के प्रति अद्भुत श्रद्धा की भावनाओं को स्वरों में बाँधता है।

संगीत को ईश्वर प्राप्ति का सबसे सरल मार्ग बताया गया है। कहा गया है कि नाद ही ब्रह्म है। संगीत, साधना एवं पूजा है। श्रीकृष्ण ने भी अर्जुन से कहा–**'अहं वेदानां सामवेदोऽस्मि'** अर्थात् मैं वेदों में सामवेद हूँ।

भारतीय संस्कृति में संगीत को भक्ति का श्रेष्ठतम् माध्यम माना जाता रहा है। नृत्य की उत्पत्ति भगवान शंकर से मानी जाती है। माता बागीश्वरी को वीणाधारिणी तथा संगीत और साहित्य की देवी माना जता है। भगवान श्रीकृष की मुरली को समस्त विश्व जानता है। इस प्रकार की अनेक कथाएँ संगीत और देवताओं के सम्बन्ध में लोक प्रचलित है जो इस बात का प्रमाण है कि संगीत पवित्र और पूज्यनीय है।

हिन्दू जनजीवन में संगीत मतुख्यतः दो प्रकार से सम्मिलित रहा है। पहला प्रकार विशुद्ध रूप से भक्ति संगीत का है, जिसके अन्तर्गत अपने उपास्य की भक्ति तथा उसके गुणों का गान करना गायक अथवा भक्त का एकमात्र उद्देश्य होता है तथा दूसरा रूप लोकरंजन से सम्बन्धित है, जिसके अन्तर्गत श्रृंगारपूर्ण अथवा सामाजिक विषय से सम्बन्धित रचनाओं का गायन प्रमुख है।

भारतीय संगीत यहाँ के पवित्र मंदिरों के प्रांगण में ही पला–बढ़ा तथा विकसित हुआ है। सैकड़ों हजारों वर्षों से हिन्दू भक्तगण संगीत के माध्यम से अपने आराध्य को रिझाते रहे हैं, चाहे वे नारद अथवा तुम्बुरू–जैसे पैराणिक पात्र हो अथवा मध्यकाल में जन्में संगीत सम्राट तानसेन के संगीत गुरू स्वामी

हरिदास जी अथवा आधुनिक संगीत के उद्धारक के रूप में सुविख्यात पं0 विष्णु दिगम्बर पलुष्कर—जैसे भक्त गायक, सभी ने संगीत को अपनी साधना माध्यम बनाया।

प्राचीन काल से लेकर अब तक के संगीत में ईश्वर भक्ति में व इतर गाये जाने वाले सभी पदों व रचनाओं में देवताओं का वर्णन अवश्य मिलता है। इनमें भी सबसे ज्यादा प्रसंग राधा और कृष्ण से सम्बन्धित मिलते है, चाहे व ध्रुपद हो धमार हो, ख्याल ठुमरी, दादरा होरी, कजरी, झूलन आदि क्यों न हो। पारम्परिक रूप से इन सभी विधाओं में राधा—कृष्ण किस प्रकार अर्थात् किन—किन रूपों में वर्णित है और इनकी लीलाओं का वर्णन प्राप्त होता है इसका कुछ उदाहरण भारतीय संगीत में प्रचलित गायन, शैलियों व विधाओं के माध्यम से प्रस्तुत है।

ध्रुपद :— ध्रुपद का अर्थ है वह पद जो अचल और अटल हो। हमारे हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में ध्रुपद गायन शैली अत्यन्त ही प्राचीन मानी गई है। संगीत की ध्रुपद शैली में बुलन्द आवाज के साथ गायन होता है तथा सुकुमारता से सम्बन्धित खटके, मुर्की का आभाव होता है।

ध्रुपद गायन शैली में राधा कृष्ण सम्बन्धित कई रचनाएं प्राप्त होती है। जैसे उदाहरण स्वरूप में राग वृन्दावनी सारंग में बेतिया घराना की एक ध्रुपद रचना—

स्थाई— **वृन्दावन बैठे मग, जोहत है बनवारी**

कुंज भवन अति पावन, शीतल सुगन्ध माली।।

अन्तरा— **सुन मुरली के धुन, वंशी वट यमुना के तट**

निडर नट नागर, बोलत है री आली।।

राग मियाँ मल्हार में रमेशचन्द्र राज चौबे द्वारा चारताल में रचित एक रचना प्रस्तुत है—

स्थाई— **नाचत मोरन संग श्याम मुदित, श्यमाहि रिझावत।**

तैसिये कोकिला अलापत पपीहा देह सुर, तैसिये मेहा गरज मृदंग बजावत।।

अन्तरा— **तैसिये स्याम घटा निस कारी, तैसिये दामिनि कौंध दीप दिखावत।**

श्री हरिदास के कुँज बिहारी, रीझ—रीझ राधे हँस कंठ लगावत।।

प्रस्तुत रचना राधा और कृष्ण की सुन्दर लीला का अद्‌भुत वर्णन किया गया है।

धमार :—धमार गीत का एक प्राचीन प्रकार है। धमार शैली ध्रुपद की तुलना में कुछ हल्की परन्तु गम्भीर गायकी है, इसे होरी भी कहते हैं। यह धमार ताल में गाई जाती है। इसमें अधिकतर राधा—कृष्ण और

गोपियों अथवा ब्रज की होरी का वर्णन मिलता है। धमार श्रृंगार रस प्रधान गायकी है। उदाहरण–राग ललित में रचित 'बेतिया घराने'' की एक पारम्परिक रचना

स्थाई– **नट नागर साँवरों, जनि डारो आँखिन अबीर**

अन्तरा– **बरजो रही बरजो नहीं मानत गहि पकड़त उझकत है चीर।।**

ख्याल :–ख्याल शब्द अरबी भाषा का है। इसका अर्थ है कल्पना विचार या तर्क। आज की प्रचलित गायन पद्धतियों में ख्याल गायन सबसे अधिक लोकप्रिय है। वर्तमान शास्त्रीय संगीत में यह इतना अधिक घुलमिल गया है कि इसके बिना रागदारी संगीत की कल्पना ही नहीं की जा सकती।

भारतीय शास्त्रीय संगीत ज्यादा से ज्यादा ख्याल की बन्दिशों में राधा–कृष्ण प्रेम व उनकी लीलाओं का वर्णन प्राप्त होता है। कुछ उदाहरण–राग मुल्तानी में रचित एक बन्दिश

स्थाई– **काहे झगरा करत कान्ह मोसे। अब ना बोलूँगी श्यामसुंदर तोसे।।**

अन्तरा– **देत दुखवा नित–नित मोसे। लाज आए ना नंदनंदन तोसे।।**

प्रस्तुत उदाहरण में राधा–कृष्ण को नोक–झोक का वर्णन अतीव सुन्दर प्रतीत हो रहा है।

स्थाई– **शीश फूल और मोतियन गजरा, हार गले वा नैनन कजरा।**

अन्तरा– **चंद्रमुखी मृग नैन सलोने, नार राधिका कान्हर प्यारी।।**

राग खमाज में रचित इस बन्दिश में कृष्ण की प्यारी राधिका के हार श्रृंगार का सुन्दर चित्रण किया गया है।

ठुमरी–आचार्य बृहस्पति के अनुसार–**'ठुमरी'** देशी संगीत की ऐसी उत्तर–भारतीय गीत विधा है जिसमें कौशिकी वृत्ति का आश्रय लेकर भावाभिनय सहित स्वर, भाषा ताल और मार्ग का प्रयोग किय जाता है। नित नवीन स्वरों की विविधता भावों को वैचित्रय प्रदान करती है।

मूल रूप से ठुमरी में कृष्ण–राधा के प्रेम से सम्बन्धित पद अधिक मिलते है। यह सत्य है कि ठुमरी एक श्रृंगारिक गेय विधा है। अन्ततः प्रेम में ही तो आनन्दानुभूति होती है और आनन्द ही तो संगीत का प्रमुख उद्देश्य है। सिद्धेश्वरी देवी जी कहती थीं–''संगीत का मतलब है प्रेम, सबसे बड़ी साधना।'' ठुमरी ऐसी एकमात्र गायन शैली है जो पूर्ण रूप से सौन्दर्य, रस, भाव, प्रेम में सराबौर है।

राधा–कृष्ण के अलौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति करती हुई यह ठुमरी राग खमाज में विदुषी शोभा गुर्टू द्वारा गाई गई है। उदाहरण–

स्थाई– **राधा नंद कुंवर समझाएं रही, घर जावो लला वहीं सो वहीं।**

अन्तरा– **जात रही मैं जल भरन सागर अब घर जात मोहे लाज आये री**

ढ़ीठ लंगर हो नटनागर

राग काफी में विदुषी–बागीश्वरी देवी व बेगम अख्तर द्वारा गाई एक ठुमरी।

स्थाई– **जिन मारो पिचकारी, लला रंग की चोट लगत है।**

अन्तरा– **अबीर गुलाल, कुमकुम केसर, काहे मारत हो बनवारी।।**

इसमें बसंत वर्णन है। राधा–कृष्ण द्वारा होली खेलने का सचित्र वर्णन मिलता है।

राधा–कृष्ण के परस्पर छेड़–छाड़ से सम्बन्धित पर भी प्राप्त होते हैं। राग खमाज में एक बोल बाँट की ठुमरी उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत है–

हटो जावो रे न बोलो कान्हा, मोरी बहियाँ जनि छुवो बरजोरी,

बिनती करूँ मैं लागूँ पैया।।

कुछ ठुमरियों के पदों के मध्य में कवित्त, दोहा, शेर इत्यादि गाये जाने की परंपरा भी रही है। उदाहरण–राग खमाज में प्रसिद्ध ठुमरी–''बसुरियाँ अब ना बजावों रे श्याम, व्याकुल भई बृजबाम''

हवेली संगीत–हवेली संगीत हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत एक उपशास्त्रीय गायन शैली है जो हवेलीयों में गाया जाता था। इसमें गाये जाने वाले पद ध्रुवपद–धमार शैली पर ही आधारित होते थे। यह संगीत नाथद्वारा के वैष्णव सम्प्रदाय के अनुयाईयों द्वारा गाया जाता था। इस संगीत का प्रयोग भगवान कृष्ण की पूजा अर्चना के लिए किया जाता था। आलवार भक्तों की रचनाओं में कन्नन–निपन्नै (कृष्ण–राधा) के प्रेम की लीलाओं का वर्णन प्रचुर मात्रा में मिलता है–

हवेली संगीतकार में श्री कुम्भनदास जी के पद विपुल मात्रा में गाये जाते हैं। इनका सर्वाधिक गाया जाने वाला पद इस प्राकर है–

गिरिधरलाल रसभरें खेलत विमल बसंत राधिकासंग।।

उडत गुलाल अबीर अरगाजा छिरकत भरत परस्पर रंग।।1।।

उपर्युक्त उदाहरण में राधा–कृष्ण के होली खेलने का सुन्दर वर्णन किया गया है।

दादरा–दादरा गीत प्रकार सुगम संगीत के अंतर्गत आता है। यह गीत प्रकार पूर्ण रूप से शब्द प्रधान है। इसमें बसंत, सावन आदि का वर्णन श्रृंगारात्मक रूप से किया जाता है। इसमें शब्दों को राग तथा ताल में बाँधकर प्रस्तुत किय जाता है। इस विधा में भी राधा–कृष्ण का भरपूर वर्णन प्राप्त होता है। उदाहरण–

स्थाई– **श्याम तोहे नजरियाँ लग जायेगी।**

अन्तरा– **दिन नाही चैन, नयन नहीं नीदियाँ**

सुन तोरी मुरलियाँ मैं मर जाऊँगी

कजरी–सावन के महिने में गायी जाने वाली कजरी पूर्वी उत्तर प्रदेश में गाया जाता है। सावन की फैली शस्य श्यामला के सन्दर्भ में धान के पौधों की छोटी–छोटी कोपलों को कजरी की संज्ञा दी गयी है। ये एक वियोगश्रृंगार गायन शैली है। प्रेम क्रियाओं का

सावन के महीने में झूला डालकर –कृष्ण गोपियों की प्रेम क्रिडाओं का वर्णन भी इन गीतों के माध्यम से प्रकट किया जाता है। उदाहरण–

हरे रामा रिमझिम के बरसेला पनियाँ

झूले राधा रनियाँ ए हरि

प्रस्तुत उदाहरण में राधा–कृष्ण के सावन मास में झूला झूलने का सुन्दर वर्णन है।

झूला धीरे से झूलाओं बनवारी अरे सावरियाँ

धीरे से झूलावो मोरा जियरा डरत है

लचके कदमवा के डारी अरे सावरियाँ

अगल–बगल सब सखियाँ झूलत है।

बीचवा में झूले राधा प्यारी अरे सावरियाँ।

हमारी भारतीय संगीत परम्परा में राधा–कृष्ण व उनकी प्रेम लीलाओं का वर्णन सर्वव्याप्त है। बिरले ही कोई विधा या गायन शैली ऐसी हो जिसमें राधा–कृष्ण ना हो। यहाँ यह कहना अतिसयोक्ति ना होगा कि, राधा–कृष्ण के बिना इन सभी विधाओं में वो रस, लास्य और सौन्दर्य नहीं आ सकता था जो इनमें सर्वत्र विद्यमान है।